POLITICAL SCIENCE Dept
B.A-III (Hons). Paper-V

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College,
Tajpur, Samastipur

सम्प्रेषण के तत्व (Element of communication)

सम्प्रेषण के निम्नलिखित तत्व होते हैं —

① स्रोत (Source) —

प्रत्येक संचार का एक स्रोत होता है। इसी स्रोत में विचार या सूचना निहित होती है जिसे प्रेषित किया जाना है।

② सम्प्रेषणकर्ता (Communicator) —

~~सम्~~प्रेषण सम्प्रेषणकर्ता के मस्तिष्क में उत्पन्न होता है। क्या सन्देश भेजना है, किस मार्ग से भेजना है यही निर्धारित करता है।

③ कूट बनाना (Encoding) —

सम्प्रेषण संदेश को लिखित रूप में, मौखिक रूप में, चित्रित या सांकेतिक रूप में प्रेषित कर सकता है। वह विचारों के अभिप्राय का निर्धारण करता है अर्थात् उसका कूट बनाता है।

④ संदेश (Message) —

यह सम्प्रेषण की विषय-सामग्री होती है जो शब्द या संकेत द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

⑤ माध्यम (Channel) —

प्रत्येक सम्प्रेषण एक निश्चित माध्यम द्वारा भेजा जाता है। यह माध्यम यान्त्रिक,

तकनीकी या मानवीय हो सकता है। यह टेलीफोन, इण्टरनेट या रेलमार्ग, वायुमार्ग या अभिभूत हो सकता है।

(6) सम्प्रेषणकर्ता (Receiver) –

यह सम्प्रेषण प्राप्त करता है। यह सम्प्रेषण को पढ़ता है, सुनता है और देखता है उसके अर्थ को समझने की चेष्टा करता है। सम्प्रेषणप्राप्तकर्ता अर्थ की व्याख्या करता है और तत्सम्बन्धी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है।

(7) कूट खोलना (Decoding) –

इसका अभिप्राय है सम्प्रेषण में निहित अर्थ को समझना। सम्प्रेषणकर्ता प्राप्त संदेश का कूट खोलता है। उसके अर्थ को समझकर व्याख्या करता है। संचार की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि संदेश भेजने वाला इस प्रकार संदेश भेजे कि प्राप्त करने वाला आसानी से कूट खोल सके।

(8) पुनर्निवेश (Feedback) –

प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया वापस सम्प्रेषणकर्ता तक पहुँचती है। यह पुनर्निवेश द्वारा निर्धारित होता है कि संदेश को सही रूप में ग्रहण किया गया है या नहीं।